



राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

कार्यालय : 82, पटेल कॉलोनी, गवर्नमेन्ट प्रेस के पास, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर-302001
संरक्षक : सर्वश्री नानक कुन्दनानी, संतोष चन्द्र सुराणा, चौथमल सनाढ़ी, राजनारायण शर्मा, रामावतार शर्मा

(Regd. & Recognised by Govt. & Affiliated to ABRSM, AIPTF, AISTF, E.I. & RRKM)

सम्पत्ति सिंह	नटवर लाल पांचाल	प्रह्लाद शर्मा	अरविन्द व्यास
अध्यक्ष	सभाध्यक्ष	संगठन मंत्री	महामंत्री
मो. 94133-44625	मो. 94143-52597	मो. 94140-56109	मो. 94143-96596

प्रेस विज्ञप्ति

“जल-जीवन-हरियाली जागरूकता” अभियान का आगाज

पर्यावरण संरक्षण को लेकर शिक्षक, शिक्षार्थी व समाज में जागरूकता का संदेश देंगे राष्ट्रीय संगठन के शिक्षक –

जयपुर। 16-06-2021। संगठन के विभिन्न आयामों में सामाजिक सरोकार के तहत राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) शिक्षक, छात्र, समाज तथा राष्ट्रहित के ध्येय को लेकर सतत कार्य करता है। इसी उद्देश्य के साथ संगठन की स्थायी समिति के निर्णयानुसार राज्य में पर्यावरण संरक्षण को लेकर शिक्षक, शिक्षार्थी व समाज में जागरूकता का संदेश प्रदान करने ‘जल-जीवन-हरियाली जागरूकता अभियान’ कार्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहा है।

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के प्रदेश महामंत्री श्री अरविंद व्यास ने बताया कि हम सभी प्रकृति पूजक हैं। ऐसे में प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा एवं उनका आदर करना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है। प्रायः देखा गया है कि परिवहन के विभिन्न साधनों व फैकिरियों से धुंआ फैलाकर, आवास सुविधाओं, प्रद्योगिकी के प्रयोग, शहरीकरण, फैशन व सौंदर्यकरण आदि मानव निर्मित माहौल के द्वारा हम ही प्राकृतिक वातावरण को दूषित करते हैं। ऐसे में प्रकृति संतुलन बनाये रखने के लिए हम सभी की समग्र जिम्मेदारी है कि हम अपने विद्यालयों के बालकों तथा समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए संदेश वाहक बनें।

‘पर्यावरण संरक्षण हेतु संगठन के ये तीन बड़े अभियान’

संगठन के प्रदेशाध्यक्ष श्री सम्पत्तिसिंह ने बताया कि संगठन ने सम्पूर्ण प्रदेश में जून से अक्टूबर तक तीन बड़े कार्यक्रम आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने का निर्णय लिया है। जो इस प्रकार है –

- ‘धरती माता का करे श्रृंगार’ कार्यक्रम के तहत स्कूल एवं आसपास वृक्षारोपण, स्कूल के आसपास सफाई व कचरा नहीं फैकने, प्लास्टिक थैलियों का उपयोग बन्द करने जैसे कार्य।
- ‘जल शक्ति संरक्षण अभियान’ कार्यक्रम के तहत स्कूल के बालकों को जल के महत्व व उसके संचय, जलाशयों को गंदा नहीं कर उसकी साफ सफाई के महत्व के बारे में अवगत करवाना।
- ‘जीव संरक्षण अभियान’ कार्यक्रम – पशु के लिए घास व पानी की टंकिया लगावाने, पक्षियों के लिए दाना व पानी के लिए परिंदे या सकोरे लगवाना।

इन 15 उपायों को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाकर करें पर्यावरण संरक्षण

प्रदेश संगठन मंत्री श्री प्रह्लाद शर्मा ने बताया कि इसके अतिरिक्त उक्त तीनों कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए इन 15 उपायों को विद्यालय के बालकों व समाज के सामने रखते पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रदान करना है।

- प्रकृति के सानिध्य का सुख समझें। अपने आसपास छोटे पौधे हो या बड़े वृक्ष लगाएं। धरती की हरियाली बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हो तथा लगे हुए पेड़-पौधों का अस्तित्व बनाए रखने का प्रण ले सहयोग करें।

2. अपने या बच्चों के जन्मदिन हो या कोई भी यादगार क्षण पेड़ लगाकर उन यादों को चिरस्थायी बनाएं।
3. हल्दी कुंकु का घरेलू आयोजन हो या बड़े समारोहों में अतिथि स्वागत, पुष्प गुच्छ के स्थान पर हार पहनाने की बजाए पौधे देकर सम्मानित करें, स्नेह संबंधों को चिरस्थायी बनाएं।
4. सड़कें या घर बनाते समय यथासंभव वृक्षों को बचाएं अत्यावश्यक हो तो पांच गुना पेड़ लगाकर प्रकृति को सहेजे।
5. अपने घर आंगन में थोड़ी सी जगह पेड़—पौधों के लिए रखें। ये हरियाली देंगे, तापमान कम करेंगे, पानी का प्रबंधन करेंगे व सुकून से जीवन में सुख व प्रसन्नता का एहसास कराएंगे।
6. पानी का संरक्षण करें, हर बूंद को बचाएं, ब्रश करते समय नल खुला न छोड़ें, शॉवर की जगह बाल्टी में पानी लेकर नहाएं, गाड़ियां धोने की बजाए बाल्टी में पानी लेकर कपड़े से साफ करें, आंगन व फर्श प्रतिदिन धोने की बजाए झाड़ू व बाद में पौछा लगाकर सफाई करें। प्रतिदिन फर्श साफ करने के बाद पौछे का पानी गमलों व पौधों में डालें। फिनाइल रहित पानी लें, दाल, सब्जी व चावल धोने के बाद इकट्ठा कर पानी गमलों व क्यारियों में डाले, सार्वजनिक नलों को बहते देखें तो नल बंद करने की जहमियत उठाएं, मेहमानों को पानी छोटे गिलास में दें व फिर भी पानी बचे तो गमलों में डालें, बर्तन धोते समय पानी का किफायत से उपयोग करें, कपड़ों में कम से कम साबुन डालें ताकि कम पानी में कपड़े धुल सकें, कूलर इत्यादि का उपयोग घर के सभी सदस्य साथ बैठकर करें, नल को टपकने न दें, प्लम्बर बुलाकर तुरंत ठीक करवाएं, टंकी बहने न दें।
7. ऑफिस हो या घर बिजली का किफायती उपयोग करें, कमरे से बाहर निकलते लाईट, पंखे बंद करें, एक ही कमरे में एसी, टी.वी. इत्यादि चलाएं, एसी व फ्रिज में जहरीली गैसे प्रयुक्त न हों इसका ध्यान रखें व ऐसे ही उपकरण खरीदने का आग्रह करें जो पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाए, सड़कों पर देर तक जलने वाली लाईट्स बंद करें या करवाएं, विद्युत उपकरणों का समय—समय से रखरखाव करें।
8. पेट्रोल, यह प्राकृतिक संपदा महंगी भी है व इसका पुर्नउत्पादन बहुत लम्बा है अतः किफायती उपयोग करें, संभव हो तो पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें, एक ही दिशा में रहने वाले कर्मचारी एक साथ दफ्तर आए—जाए, देर तक रुकना पड़े तो इंजन बंद करें, गाड़ी की सर्विसिंग यथासमय कर वातावरण को प्रदूषित होने से बचाएं।
9. पशु पक्षियों को जीने दें। इस पृथ्वी पर मात्र आपका ही नहीं मूक पशु—पक्षियों का भी अधिकार है अतः उनके आवास स्थलों पेड़—पौधों को नष्ट न करें, उनके दाना—पानी का इंतजाम कर थोड़ी सहदयता दिखाएं, बाल्टी में गाय, बकरी, कुत्ते आदि के लिए व चकोरों में पक्षियों के लिए पानी का इंतजाम करें। गाय, कुत्ते को रोटी दें पर पॉलीथीन समेत खाना न फेंकें, उनकी जान जा सकती है, प्राणीमात्र पर दया का भाव दिखाएं।
10. घर का कचरा सब्जी, फल, अनाज को पशुओं को खिलाएं।
11. अन्न का दुरुपयोग न करें। बचा खाना खराब होने से पहले गरीबों में बांटे।
12. पॉलीथीन का उपयोग ना करें। सब्जी व सामान के लिए कपड़े की थैलियां गाड़ी में सदा साथ रखें।
13. यहां वहां थूककर, चाहे जहां मूत्र विसर्जन के लिए खड़े होकर अपनी असभ्यता व अशिक्षित होने का प्रश्नचिन्ह न लगने दें।
14. जन्म दिन पर औषधिय पौधे उपहार स्वरूप दिए जावे।
15. बच्चों के लिए पर्यावरण मित्र नुस्खे अपनाने का कहें। कागज की बर्बादी न करें। कागज के लिए हम वृक्ष काटते हैं। कागज की बचत से वृक्षों की सुरक्षा होती है, पैदल चलें, साइकिल का उपयोग करें या बस से स्कूल जाएं। इससे ईंधन की बचत होती है एवं प्रदूषण घटता है। नहाते समय एवं ब्रश करते समय पानी बंद करें। इससे पानी की बचत होती है, स्कूल में जैव बगीचा लगाएं एवं उसके लिए कम्पोस्ट बनाएं। इससे आप प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावकारी उपयोग को सीख

सकते हैं, उपयोग न होने की स्थिति में लाईट तथा उपकरण/इलेक्ट्रॉनिक्स बंद कर दें। इससे बिजली की बचत होती है, डिब्बाबंद पदार्थों एवं डिस्पोजेबल्स का उपयोग कम कर कचरा घटाएं। आप अपना पर्यावरण स्वच्छ रख सकते हैं, वीडियो गेम/टीवी के बजाय खेल का समय प्रकृति के साथ बिताएं। आप ऊर्जा की बचत कर सकते हैं, साथ ही अधिक स्वस्थ रह सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण स्वयं तथा नई पीढ़ी को प्रकृति, पर्यावरण, पानी व पेड़—पौधों का महत्व समझाएंगे।

आशीष त्रिवेदी

(आशीष त्रिवेदी)
संयोजक — मीडिया प्रकोष्ठ
राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)